JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्र–भावना, राष्ट्र–प्रेम व राष्ट्र–भक्ति

डॉ. राम मनोहर उपाध्याय
सहायक आचार्य हिन्दी विभाग
आइ0ई0एस0 विश्वविद्यालय
भोपाल म0.प्र0.

श्रीमती रजनी
शोधार्थी. आइ0ई0एस0 विश्वविद्यालय
भोपाल म0.प्र0.
ई.मेल– rajnip512@gmail.com

सारांश / आमुख

आधुनिक युग में सुभद्रा कुमारी चौहान जी एक मात्र महिला कवयित्री हैं, जिनके काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है। देशभक्त एवं लेखनी की धनी कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने देशवासियों की सोयी हुई आत्मा को जगाया और उन्हें कर्तव्य मार्ग पर अग्रसित किया। सुभद्राजी देशभक्त पहले थी, बाद में कुछ और। उनकी रचना 'झॉसी की रानी' में रानी लक्ष्मीबाई की वीरतापूर्वक चित्रण इसका प्रमुख उदहरण है। उनकी कविता उत्कट राष्ट्र–भावना से आकण्ठ सराबोर है, उन्होंने तत्युगीन भारत में चल रही स्वाधीनता–संग्राम की गतिविधियों को मार्मिक और ओजस्वी ढंग से अभिव्यक्ति दी है। उनकी कविता में अनुभूति की सच्चाई झलकती है। उनकी कविता की भाषा मे ओज एवं प्रसाद गुण की प्रधानता रही है।

मुख्य शब्द– राष्ट्र–भावना, राष्ट्र–प्रेम , राष्ट्र–भक्ति

प्रस्तावना–

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने युग की राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय काव्यधारा की महत्वपूर्ण गायिका है। उनका महत्व एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व और क्रांतिकारी लेखिका दोनों ही रुपों मे है। लेखिका ने जैसा जीवन जिया है वैसा ही रुप अपनी रचनाओं में अंकित कर दिया है। उनके काव्य की विषय–सामग्री देश की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थिति से प्रभावित है। सुभद्राजी के काव्य में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दोनों ही विषयों को अभिव्यक्ति मिली है।

आधुनिक युग में सुभद्रा कुमारी चौहान जी एक मात्र महिला कवयित्री हैं, जिनके काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है। देशभक्त एवं लेखनी की धनी कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने देशवासियों की सोयी हुई आत्मा को जगाया और उन्हें कर्तव्य मार्ग पर अग्रसित किया। सुभद्राजी देशभक्त पहले थी, लेखिका बाद में, अतः उनमें देश की स्वाधीनता के लिए राष्ट्रीय तत्वों के प्रति रागात्मक लगाव गहरा था। उन्होंने अपने सभी भावनात्मक तत्वों को अपनी कविताओं में पूर्ण मनोवेग के साथ लिखा है।

जालियावाला बाग में बसंत कविता में उन्होंने अपने राष्ट्र के निवासियों के साथ घटित त्रासद घटना से व्यधित होकर बाग की बहार और भारतीयों के प्रति हुए अत्याचार को विराधाभास के द्वारा स्पष्ट किया है।

परिमल–हीन पराग दाग सा बना पड़ा है,
हो यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
ओ, प्रिय ऋतुराज, किंतु धीरे से आना
यह है शोक, स्थान, यहाँ मत शोर मचाना।
वायु चल, पर मंद चाल से चल उसे चलाना,
दुख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।
कोकिल गायें, किंतु राग रोने का आवें,
भ्रमर करे गुंजार कष्ट की कथा सुनाए।

यह जलियावाला बाग के भीषण नरसंहार से व्यथित होकर सुभद्रा जी ने अपनी संवेदनाओं को प्रकृति से एकाकार करने की चेष्टा की है। राजनीति से अनुप्रणित कविताओं में उन्होंने शासक वर्ग की गलत नीतियों भारतीय जनता पर होने वाले अत्याचारों व राष्ट्रीय क्रांतियों का वर्णन किया है।

राष्ट्रीय प्रसंगों में जलियावाला बाग हत्या के झंडा सत्याग्रह, राष्ट्र नायकों तथा लाला लाजपत राय की मृत्यु, महात्मा गॉधी का जीवन चरित्र आदि समस्त विषयों पर उन्होंने रचना की। साथ ही राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्र भाषा के प्रति प्रेम को भी भावुकता से लिखा।

राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी जी के सिद्धांतो एवं उनकी राष्ट्रीय नीतियों का सुभद्रा ही पर बहुत प्रभाव पड़ा। उनकी अहिंसावादी प्रवृत्ति से प्रभावित होकर उन्होंने 'लेखनी' को हथियार के रुप में इस्तेमाल किया। अपने लेखन में उन्होंने परतंत्र देष की यातना और व्यधा की निर्झरणी बहायी है तो कही स्वातंत्रयोत्तर भारत को दिव्य शक्ति मानकर अराधना की है।

परतंत्रता के दिनों में एक महिला होकर जैसी निर्भीकता और स्पष्टता सुभद्रा जी ने दिखाई वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी यह ओजस्विता भाषा की सषक्तता एवं मुखरता वंदनीय है। इसी कारण इन्हें भारतीय संग्राम की 'प्रथम राष्ट्र कोकिला' की उपाधि से विभूषित किया गया है। उनके साहित्य में वह शक्ति है जो तीर, तलवार, बंदन और बम में भी नहीं है। वह मुर्दो में जीवन का संचार कर सकती है।

लेखिका के जीवन में जितने भी रुप और भय दिखते है, ये सभी विभिन्न शीर्षकों द्वारा उनकी रचनाओं में अवतरित हुए है। सुभद्रा जी के समग्र राष्ट्रीय काव्य के मूल्य दो रुप में प्रकट है–

1, राष्ट्र प्रेम 2, राष्ट्र भक्ति

सुभद्राजी ने देश से प्रेम किया और स्वयं को देश के प्रति समर्पित कर दिया। जिसकी झलक इनके काव्य में साफ–साफ दिखाई देती है। राष्ट्र प्रेम में डूबकर उन्होंने देश के प्रत्येक तत्व का मुक्त कंठ से गुणगान किया तथा मातृभूमि, प्रकृति, भाषा, संस्कृति, इतिहास, धर्म आदि के साथ ममत्व स्थापित किया 'झॉसी की रानी' शीर्षक प्रसिद्ध कविता में स्वराज्य प्राप्ति के लिए मर मिटने वाली झॉसी की रानी लक्ष्मीबाई की उन्होंने उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा की है–

चमक उठी सन् सत्तावन में,
वह तलवार पुरानी थी,
बुदेंले हरबोलों के मुँह हमने
सुनी कहानी थी

खूब बड़ी मर्दानी वह तो,
झॉसी वाली रानी थी।

यह कविता तत्कालीन अंग्रेजों समाज्यवाद के विरोध में जन–जन की कंठहार थी। योद्धा इतिहास रचता है और कवि उनके यशोगान द्वारा भविष्य को इतिहास से प्रेरित करता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ राष्ट्र निर्माण की भूमिका के रुप में

राष्ट्रीय कविता धारा में सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम विशेष उल्लेखनीय है। डॉ. दयानंद शर्मा ने सुभद्रा कुमारी चौहान जी के संदर्भ में लिखा है– वास्तव में सुभद्रा कुमारी चौहान अपने युग की गतिविधि के अनुसार सुभद्रा जी का आकुल हृदय देश की परतंत्रता के कारण उसकी दुर्दषा पर क्रंदन कर उठा। देश की मुक्ति के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के साथ–साथ देश–प्रेम के भावों को उन्होंने अपने ओजस्वी स्वर में अभिव्यक्ति भी दी है।

सुभद्रा जी ने लक्ष्मीबाई की अद्म्य साहस और वीरता को प्रस्तुत कविता में जीवंत कर दिखाया।

सिंहासन हिल उठे राजवंषों ने भृकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

कवयित्री ने जनता जनार्दन में स्वतंत्रता के प्रति नवीन जोश, अद्म्य उत्साह और उत्कृष्ट राष्ट्र–भावना को जागृत करने के लिए लक्ष्मीबाई की वीरता को गाथा को ओजस्वी स्वर में जीवंत कर दिखाया है।

कवियत्री हर हाल में अपने देश को स्वतंत्र देखना चाहती थी, उनकी राष्ट्र भावना 'विजयादशमी' नामक कविता में इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है–

''रामचंद्र की विजय–कथा का भेद बता आदर्ष सखी
पराधीनता से छूटे यह प्यारा भारतवर्ष सखी।''

श्रीराम के लंका विजय के उपलक्ष्य में मनाये जाने वाले उत्सव विजयादशमी के प्रेरणा प्राप्त करते हुए राष्ट्र को स्वतंत्र करने का आहवान किया।

''दो विजये! वह मात्मिक बल दो, वह हुकार मचाने दो,
अपनी निर्बल आवाजों से, दुनियां को दहलाने दो,
जय स्वतंत्रिणी भारत मॉ! यों कहकर मुकुट लगाने दो
हमें नही इस भूमंडल को, मॉ पर बलि–बलि जाने दो।

सुभद्रा जी ने असहयोग आंदोलन को सषक्त बनाने एवं कवि–लेखकों को राष्ट्र–प्रेम के गान तथा क्रांतिकारी वीरों की गाथा लिखने का आहवान किया है 'वे कुंजें' नामक कविता में कवयित्री का ओजपूर्ण स्वर गूॅज रहा है।

'विजयिनी मॉ के वीर सुपुत्र पाप से असहयोग ले ठान
गुंजा डाले स्वराज्य की तान और सब हो जावे बलिदान,

जरा ये लेखनियॉ उठ पड़े, मातृभूमि को गौरव से मढैं,
करोड़ों क्रांतिकारिणी मूर्ति, पलों में निर्भयता से गढैं।

स्वाधीनता आन्दोलन में प्रत्येक भारतवासी एकसूत्र में पिरोने का गौरव हिन्दी भाषा को प्राप्त हुआ। इस गौरवशाली भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की अभिलाषा सुभद्रा जी ने कुछ इस अंदाज में अभिव्यक्त की है।

'मुझ–सी एक–एक की बन तू, तीस कोटि की आज हुई,
हुई महान सभी भाषाओं की, तू ही सरताज हुई।
तू होगी आधार देश की, पार्तामेण्ट बन जाने ने
तू होगी सुख–सार, देश के उजड़े क्षेत्र बसने में
तू होगी व्यवहार, देश के बिछड़े हृदय मिलाने मे।

वर्षो की गुलामी के पश्चात् अनेकविध यातनाओं और बलिदानों के बाद जब हमारा भारत देष आजाद होता है, तब हर हिन्दुस्तानी हर्ष, गर्व और गौरव का अनुभव करता है। सुभद्रा जी स्वतंत्र भारत का स्वागत कुछ इन शब्दों में करती है।

'आ स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ, स्वागत करती हूँ, तेरा
तुझे देखकर आज हो रहा, दूना प्रमुदित मन मेरा।
आ, उस बालक के समान, जो है गुरुता का अधिकारी
आ, उस वीर बालक सा, जिसको विपदाएँ ही है प्यारी।

सुभद्रा जी ने इस कविता के माध्यम से उस दिन शहीद हुए बालकों, युवाओं और वृद्धों के चीत्कार को इस प्रकार श्रद्धांजलि दी है।

'ओ प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना
यह है शोक स्थान, यहॉ मन शोर मचाना
कोमल बालक मरे यहॉ गोली खाकर
कलियॉ उनके लिए, गिराना थोड़ी लाकर
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए है
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए है।
कुछ कलियॉ अधखिलि यहॉ इसलिए चढ़ाना,
करके उनकी याद अश्रु के ओस बहाना,
पड़प–पड़प कर बृद्ध मरे है, गोली खाकर,
शुष्क पुष्प कुछ वहॉ गिरा देना तुम जाकर।

यहॉ व्यथित हृदय कवयित्री ऋतुराज बसंत से अनुरोध करती है कि, तुम उन शहीदों की समाधि स्थान पर कलियॉ, पुष्प चढ़ाना और ओस रुपी अश्रु बहाना।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता उत्कट राष्ट्र–भावना से आकण्ड सराबोर है, उन्होंने तत्युगीन भारत में चल रही स्वाधीनता–संग्राम की गतिविधियों को मार्मिक और ओजस्वी ढंग से अभिव्यक्ति दी है। उनकी कविता में अनुभूति की सच्चाई झलकती है। उनकी कविता की भाषा मे ंओज एवं प्रसाद गुण की

प्रधानता रही है। सुभद्राजी ने राष्ट्र निर्माण मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भक्ति उनकी कविता का एक मात्र स्वर है।

निष्कर्ष–

कहा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता उत्कृष्ट राष्ट्र भावना से साराबोर है। उनकी कविता में अनुभूति की सच्चाई झलकती है। सुभद्रा जी ने प्राचीन गौरवमयी गाथाओं से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग, राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का निदर्षन अपने काव्य में किया है। आधुनिक युग में जब राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ तब कवियों ने जनजागृति के उद्देश्य से प्राचीन इतिहास का खूब बखान किया ताकि जनता अपने खोये हुए वैभव के चुन।

अतः कह सकते है कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने साहित्य में आजादी की जंग भरपूर मात्रा में जियाघ्र सुभद्राजी राष्ट्रीय भावना का स्रोत कांग्रेसी आंदोलन नही, अपितु जनता के बीच जगी राष्ट्रीय चेतना थी। उसी राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में अद्भुत संवेदनात्मक शक्ति के साथ हुई है।

संदर्भ ग्रंथ–

राष्ट्रवाद

1. झांसी की रानी – सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ सं. 33
2. उन्मादिनी – सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ सं. 56
3. हिन्दी साहित्य का वस्तुपटक इतिहास – डॉ. राम प्रसाद मिश्र पृष्ठ सं. 56
4. हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना – देवराज पथिक, कादंबरी प्रकाशन नई दिल्ली
5. सुभद्रा कुमारी चौहान की सम्पूर्ण कहानियॉ – डॉ. मधु शर्मा (परिचय से)
6. भारतीय साहित्य का राष्ट्रीय स्तर – जगदीश तोमर पृष्ठ सं. 61
7. लेख – राष्ट्रीय जागरण और सुभद्रा कुमारी चौहान – रामपत यादव पृष्ठ सं. 61
8. मुकुल तथा अन्य कविताएँ, सुभद्रा कुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण 1996, पृष्ठ – 4
9. मित्र अनुराध, रामेश्वरनाथ (जुलाई 2004), राष्ट्रभाषा भारती, कोलकाता निर्मल प्रकाशन पृष्ठ – 20
10. झॉसी की रानी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सनगे पब्लिशिंग हाउस, 2020
11. लेख राष्ट्रीय जागरण और सुभद्रा कुमारी चौहान, रामपत पृष्ठ – 61
12. सुभद्रा कुमारी चौहान की संपूर्ण कहानियॉ – डॉ. मधु शर्मा (परिचय से)